



न्यूज़ बीफ

ईरान-पाकिस्तान के संबंध मौजूदा मुश्किलों से पार पा लेंगे: हसन नौरियन



इस्लामाबाद (पाकिस्तान)। देश की आर्थिक राजधानी कराची में ईरान के महावाणिज्य दूत के पद पर रहे हसन नौरियन ने ईरान और पाकिस्तान के बीच बातचीत, सहयोग और आपसी समझ की वकालत की है। उन्होंने कहा कि दोनों देश साझा मूल्यों, मजबूत ऐतिहासिक संबंधों और एक-दूसरे से जुड़ी आजीविका के जरिए आपस में जुड़े हुए हैं। महावाणिज्य दूत नौरियन ने कहा कि दोनों देशों के लोगों की धार्मिक मान्यताएं, सामाजिक मूल्य और संस्कृति एक जैसी हैं और उनके ऐतिहासिक संबंध तथा लोगों के बीच आपसी संपर्क आज भी मजबूत हैं। द न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने कहा कि ईरान इस समय सबसे कड़े आर्थिक प्रतिबंधों का सामना कर रहा है। जब दोनों में से किसी एक पर कोई मुश्किल आती है, तो दूसरा देश भी उससे प्रभावित होता है। नौरियन ने कहा, हमारी अर्थव्यवस्था, समाज और आजीविका एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। उन्होंने बताया कि दोनों देशों के लोग महंगाई और आर्थिक अनिश्चितता से जुड़ा रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि मौजूदा हालात में बातचीत, सहयोग और आपसी समझ बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा, रात चाहे कितनी भी घनी क्यों न हो, सबरा जरूर होता है। उन्होंने भरोसा जताया कि मुश्किल हालात के बावजूद दोनों देशों का भविष्य उज्ज्वल है। नौरियन ने पाकिस्तानी लोगों को उनकी हमदर्दी, एकजुटता और सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि ये मुश्किल दिन गुजर जाएंगे और इस क्षेत्र पर छाप काले बादल जल्द ही छट जाएंगे। मक्का और मदीना पर हमले की निंदा इस बीच, पाकिस्तान उरुमा काउंसिल के चेयरमैन हाफिज ताहिर महमूद अशरफी ने मक्का और मदीना को निशाना बनाकर किए गए हूती के बैलिस्टिक मिसाइल हमलों की निंदा की है। उन्होंने कहा कि इस्लाम के सबसे पवित्र स्थलों की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

अमेरिका के स्कूलों में हिंदू धर्म की सही पढ़ाई के लिए अभियान तेज, शिक्षकों से जुड़ रहा हिंदू अभिभावक संगठन



वाशिंगटन। अमेरिका में हिंदू धर्म और उसके इतिहास की सही जानकारी स्कूलों में पढ़ाने की मांग तेज हो रही है। हिंदू-अमेरिकी अभिभावक संगठन हिंदू पेटेंट्स नेटवर्क (एचपीएन) शिक्षकों के साथ मिलकर पाठ्यक्रम में हिंदू धर्म की प्रस्तुति को अधिक सटीक, निष्पक्ष और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील बनाने की दिशा में काम करने में जुटा है। संगठन का दावा है कि न्यू जर्सी में आयोजित एक शिक्षक सम्मेलन में उसके शैक्षणिक संसाधनों को सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली। एचपीएन के मुताबिक, संगठन ने 2026 न्यू जर्सी टीचर्स कांफ्रेंस में बदलती दुनिया में हिंदू धर्म की सही और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षा विषय पर संवादात्मक सत्र आयोजित किया। इसमें करीब 200 शिक्षकों ने हिस्सा लिया। सत्र के दौरान हिंदू धर्म से जुड़ी आम गलत धारणाओं, पाठ्यक्रम में उसकी प्रस्तुति और कक्षाओं में शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों पर चर्चा की गई। संगठन ने अपने समर्थकों को दिए संदेश में कहा कि शिक्षकों ने सही जानकारी पर आधारित शैक्षणिक सामग्री की जरूरत स्वीकार की और व्यावहारिक संसाधनों में रुचि दिखाई।

सऊदी के ताजीर कानून में होता है जज के विवेक पर आधारित दंड का प्रावधान

दुबई। इस्लामिक देश सऊदी अरब की न्याय व्यवस्था हमेशा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बनती है। यहां लागू शरिया व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण प्रावधान अपराधों के लिए दंडात्मक प्रावधान है जिनकी सजा करने का अधिकार न्यायाधीश के विवेक पर होता है। हाल ही में एक बांग्लादेशी दंपती, नजरूल इस्लाम और सीती अख्तर, को कथित अनैतिक कृत्य के मामले में मृत्युदंड दिए जाने की खबरी के बाद ताजीर कानून एक बार फिर चर्चा में आया है, हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है। इस्लामिक न्यायशास्त्र में अपराधों और सजाओं को समझने के लिए तीन प्रमुख श्रेणियां हैं- हुदूद, किासा और ताजीर। हुदूद के अंतर्गत उन अपराधों के लिए सजाएं शामिल हैं जो पारंपरिक इस्लामिक कानून में निश्चित रूप से निर्धारित हैं, जैसे चोरी या व्यभिचार। किासा मुख्य रूप से हत्या और शारीरिक चोट जैसे मामलों में प्रतिशोध या उसके बदले में मुआवजे से संबंधित है। इसके विपरीत, ताजीर उन अपराधों के लिए दंडात्मक प्रावधान है जिनकी सजा हुदूद की तरह निश्चित रूप से तय नहीं होती। ताजीर की यह प्रमुख विशेषता है कि इसमें सजा तय करने के लिए न्यायाधीश मामले की परिस्थितियों, अपराह की गंभीरता, उसके पीछे की वजहों और समाज पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार कर सकता है। इसके तहत वेतानी, जमाना, कारावास या अन्य प्रकार के दंड दिए जा सकते हैं। यह जानना जरूरी है कि ताजीर के तहत मृत्युदंड देने की कानूनी सीमा और इसके इस्तेमाल को लेकर इस्लामिक विद्वानों और कानूनी विशेषज्ञों के बीच मतभेद रहे हैं। इसलिए यह कहना सही नहीं होगा कि न्यायाधीश को हर अपराध में मनमाने ढंग से मौत की सजा देने का असीमित अधिकार प्राप्त है।

नईदुनिया

पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के दावे को ध्यान भटकाने वाला बताया

इस्लामाबाद

पाकिस्तान ने अफगान तालिबान शासन के हालिया इस दावे को खारिज कर दिया, जिसमें कहा गया कि अफगानिस्तान के पास पाकिस्तान को अस्थिर करने की न तो क्षमता है और न ही कोई इरादा। पाकिस्तान ने काबुल की इन बातों को ध्यान भटकाने वाला करार दिया। इस्लामाबाद ने तालिबान शासन से कहा कि वह अफगान धरती से काम कर रहे आतंकवादी समूहों को लेकर उसकीलंबे समय से चली आ रही सुरक्षा चिंताओं पर ध्यान दे।

द न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के शनिवार की जारी बयान में इस्लामाबाद ने कहा कि पाकिस्तान की सुरक्षा एजेंसियों पर दोष मढ़ने से अफगान तालिबान शासन अपनी इस जिम्मेदारी से नहीं बच सकता कि वह अफगान क्षेत्र का इस्तेमाल पाकिस्तान के

खिलाफ आतंकवाद के लिए न होने दे। मंत्रालय ने कहा, पाकिस्तान की चिंताएं केवल अटकलों पर आधारित नहीं हैं। मंत्रालय ने कहा कि इसके समर्थन में संयुक्त राष्ट्र और अमेरिका का अफगानिस्तान में आतंकवादी समूहों की मौजूदगी और उनकी गतिविधियों पर किए गए आकलन का हवाला दिया गया है।

मंत्रालय के अनुसार, अमेरिकी रिपोर्ट में कहा गया है कि अफगान तालिबान ने प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) को अफगान धरती से काम करने की छूट दे रखी है। तालिबान के समर्थन और इस समूह को मिली अधिक आजादी के कारण पाकिस्तान पर हमलों में बढ़ोतरी हुई है। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि टीटीपी के पास 4,000 से 6,000 लड़ाके हैं। मंत्रालय ने कहा, ऐसे आकलन अफगान धरती

से चल रहे आतंकवादी ठिकानों और उनके समर्थन नेटवर्क को लेकर पाकिस्तान की चिंताओं की गंभीरता को दर्शाते हैं।

मंत्रालय ने कहा कि काबुल का यह दावा कि अफगानिस्तान के पास पाकिस्तान को अस्थिर करने की क्षमता या दिलचस्पी नहीं है, असल चिंताओं का कोई जवाब नहीं देता। मंत्रालय ने कहा कि पाकिस्तान-अफगानिस्तान सीमा पर करके घुसपैठ करने की बार-बार की जा रही कोशिशें गंभीर जांच का विषय हैं। बयान में पाकिस्तान के आतंकवाद-विरोधी अभियानों के दौरान अफगान नागरिकों और आतंकवादी समूहों के सदस्यों के मारे जाने तथा आतंकवादियों के पास से विदेशी मूल के हथियार बरामद होने का भी जिक्र किया गया।

पाकिस्तान ने इस बात पर भी चिंता जताई है कि अफगान तालिबान और कंधार के अधिकारी

ईरान पर अमेरिका कर सकता है हमला, अंतरिम समझौता वार्ता टूटी



वाशिंगटन/ईरान

होम्रूज जलडमरूमध्य को लेकर मध्य पूर्व में जारी तनाव के बीच एक बार फिर अमेरिका जल्द ही ईरान पर हमला करने पर विचार कर रहा है। उधर, ईरान ने अंतरिम समझौते के लिए बातचीत पर रुकावट के लिए अमेरिका को जिम्मेदार ठहराया। इस बीच हूती के हमलों का दायरा बढ़ने के मद्देनजर अमेरिका ने कई देशों के अपने दूतावासों से कर्मचारियों को बुलाना शुरू कर दिया है।

अल जजीरा और एक्सओस की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का कहना है कि अमेरिका रविवार तक ईरान पर हमला करने पर विचार कर रहा है। उन्होंने कहा कि वाशिंगटन को या तो हमला (काम पूरा करना) पड़ सकता है या फिर तेहरान के साथ कोई समझौता हो सकता है।

उधर, ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेरिफियान ने अंतरिम समझौते की बातचीत टूटने के लिए अमेरिका को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने अमेरिकियों को कायर बताया और कहा कि उन्होंने सब कुछ बिगाड़ दिया है। उन्होंने कहा कि बावजूद इसके तेहरान समझौता करने की कोशिश जारी रखे।

अमेरिकी अधिकारियों को आशंका है कि यमन में ईरान समर्थित

हूथी विद्रोही अपने हमलों का दायरा सऊदी अरब से आगे बढ़ाकर क्षेत्र के अन्य देशों तक फैला सकते हैं। सुरक्षा की इस अस्थिर स्थिति के बीच, ईरान के खिलाफ अमेरिका और इजराइल के फिर से सैन्य अभियान शुरू किए जाने की संभावना भी बनी हुई है। शुक्रवार को फ्लोरिडा में एक रेली के दौरान राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, 'हो सकता है कि हम एक और छोटा आप्रेशन एपिक पन्थ्री चलाएं।

इस सप्ताह की शुरुआत में विदेश विभाग ने रियाद में अमेरिकी दूतावास, जेद्दा और दहरान में स्थित वाणिज्य दूतावासों से कर्मचारियों के परिवारों और गैर-जरूरी कर्मचारियों को वापस लौटने का आदेश दिया। एक अमेरिकी अधिकारी ने बताया कि शुक्रवार को विभाग ने संयुक्त अरब अमीरात, लेबनान, कतर और जार्डन में स्थित अमेरिकी दूतावासों से भी अपने राजनयिक और सरकारी कर्मचारियों की संख्या कम करने का आदेश दिया।

अधिकारी ने कहा, हमने तय किया है कि हूती हमलों और ईरानी आतंकी साजिशों के खतरे को देखते हुए, हमें अपनी मौजूदगी कम करनी चाहिए और केवल जरूरी स्टाफ को ही रखना चाहिए।

आखिरकार यूक्रेन में स्टारलिनक की स्पीड बहाल

वाशिंगटन

यूक्रेन का कहना है कि उनके यहां स्टारलिनक की स्पीड बहाल हो गई है। दुनिया के सबसे उमीर व्यक्ति एलन मस्क ने माना कि ड्रोन हमलों के कारण स्पेसएक्स ने सर्विस की स्पीड कम कर दी थी। एलन मस्क ने शनिवार को कहा कि उनकी कपनी स्पेसएक्स ने यूक्रेन में स्टारलिनक सैटेलाइट इंटरनेट सर्विस की स्पीड कम कर दी थी। इससे उन आप्रेशन में रुकावट आई, जिन पर यूक्रेन रूस के खिलाफ अपना बचाव करने के लिए निर्भर है।

सोबीएस न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, एक्स पर मस्क का यह बयान तब आया, जब यूक्रेन के राष्ट्रपति व्लादिमीर जेलेंस्की ने कहा कि यूक्रेन के लिए स्टारलिनक और स्टारशील्ड सैटेलाइट लिंक की स्पीड फिर से पहले जैसी हो गई है। पारबंदियों के कारण एक हफ्ते से भी अधिक समय तक फ्रंटलाइन आप्रेशन्स में रुकावट आई थी।

पिछले हफ्ते से ही यह सवाल उठ रहे थे कि मस्क के बनाए इस सैटेलाइट इंटरनेट सिस्टम में रुकावट लाने का आदेश किसने दिया था। कीव सालों से मास्को के हमलों का जवाब देने के लिए



महीने की तुलना में इस साल इसी अवधि में बिजली निर्यात का कारोबार 96 करोड़ 20 लाख रुपये बढ़ा है। वहीं, जुलाई अगस्त महीने की तुलना में इसमें 83 करोड़ 25 लाख रुपये की वृद्धि हुई है। जूलै वित्त वर्ष के पहले तीन महीनों—अगस्त से 25 अक्टूबर तक में बिजली निर्यात से कुल 1,615 करोड़ 13 लाख नेपाली रुपये का कारोबार हुआ है।

नेपाल विद्युत प्राधिकरण के कार्यकारी निदेशक दीर्घायु कुमार श्रेष्ठ ने बताया कि बाढ़ के कारण निर्यात की अनुमति प्राप्त कुछ जलविद्युत

चीन में प्यार से बच्चों को दिये जाते है कुत्ता, सुअर और लोहे का खंभा जैसे नाम



बीजिंग। चीन में माता-पिता के द्वारा छोटे बच्चों को प्यार भरे नाम देने की अजीबोगरीब परंपरा है। यहां माता-पिता अपने बच्चों को प्यार से कुत्ता, सुअर, पथर, लोहे का हथौड़ा और लोहे का खंभा जैसे अजीबोगरीब नाम देते थे। इन नामों के पीछे बच्चों के प्रति माता-पिता का गहरा प्रेम और उन्हें लंबी उम्र देने की कामना छिपी थी। प्राचीन चीन में चिकित्सा सुविधाओं का अभाव था। संक्रमक बीमारियों और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के कारण नवजात शिशुओं की मृत्यु दर काफी अधिक थी। ऐसे कठिन समय में माता-पिता अपने बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए कई तरह के पारंपरिक उपाय अपनाते थे। इसी दौरान एक ऐसी मान्यता प्रचलित हुई कि बच्चों के नाम जितने साधारण, अटपटे या कम आकर्षक होंगे, बुरी आत्माओं और दुर्भाव्य की नजर उन पर उतनी ही कम पड़ेगी। लोगों को उम्मीद थी कि इस तरह उनके बच्चे स्वस्थ रहेंगे और लंबा जीवन जी सकेंगे। इस मान्यता के चलते बच्चों को गौ शेंग, गौ डान और झू वा जैसे उपनाम दिए जाते थे। इन नामों का संबंध कुत्ते, सुअर या उनसे जुड़ी सामान्य चीजों से था। कुछ परिवार अपने बच्चों का नाम पथर, लोहे का हथौड़ा और लोहे का खंभा भी रखते थे। इसके पीछे बच्चों को मजबूत, साहसी और मुश्किल परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम बनाने की भावना थी। माता-पिता मानते थे कि ऐसे नाम उनके बच्चों को बुरी शक्तियों से बचाने में मदद कर सकते हैं।

नेपाल ने सितंबर-अक्टूबर में भारत को 592 करोड़ रुपये की बिजली बेची, बांग्लादेश को 40 मेगावाट निर्यात फिर शुरु

काठमांडू
नेपाल विद्युत प्राधिकरण ने चालू वित्त वर्ष 2026/27 के सितंबर-अक्टूबर में भारत को 592 करोड़ 50 लाख रुपये की बिजली का निर्यात किया है। बाढ़ के कारण कुछ जलविद्युत परियोजनाओं का उत्पादन बंद होने से बिजली निर्यात प्रभावित हुआ। इसके बावजूद, पिछले साल सितंबर-अक्टूबर और चालू वित्त वर्ष के अगस्त महीने की तुलना में इस साल 15 सितंबर से 15 अक्टूबर तक बिजली निर्यात से होने वाला कारोबार बढ़ा है। इस बीच, भारत के ट्रांसमिशन सिस्टम का इस्तेमाल कर बांग्लादेश को की जाने वाली 40 मेगावाट बिजली की आपूर्ति भी दोबारा शुरू हो गई है।

नेपाल विद्युत प्राधिकरण के विद्युत प्रणाली संचालन विभाग (लौड डिस्पैच सेंटर) के आंकड़ों के अनुसार, पिछले एक महीने में भारत को बिजली 63 करोड़ 39 लाख 86 हजार 8 यूनिट कुल निर्यात की गई। इस बिजली की बिक्री से 592 करोड़ 50 लाख रुपये का कारोबार हुआ।

सितंबर-अक्टूबर महीने में भारत को दो माध्यमों से बिजली बेची गई। द्विपक्षीय बिजली बिक्री समझौते के तहत भारत के हरियाणा और बिहार राज्यों को बिजली की आपूर्ति की गई। शेष बिजली भारतीय ऊर्जा निगमिय बाजार (आईईएक्स) के डे-अहेड और रियल-टाइम बाजार में प्रतिस्पर्धी दरों पर बेची गई।

नेपाल विद्युत प्राधिकरण घरेलू मांग पूरी करने के बाद बचने वाली मानसूनी बिजली हर साल भारत और बांग्लादेश को निर्यात करता है। द्विपक्षीय मध्यम अवधि के बिजली बिक्री समझौते के तहत हरियाणा और बिहार को जून से अक्टूबर तक बिजली बेची जाती है। पिछले साल 2025 में 15 सितंबर से 15 अक्टूबर तक भारत को बिजली निर्यात से 496 करोड़ 30 लाख रुपये का कारोबार हुआ था। वहीं, चालू वित्त वर्ष के जुलाई-अगस्त महीने में यह राशि 509 करोड़ 25 लाख रुपये थी।

इस तरह, पिछले साल के सितंबर अक्टूबर

परियोजनाओं का उत्पादन बंद होने के बावजूद अक्टूबर महीने में बिजली निर्यात से होने वाला कारोबार बढ़ा है। उनके अनुसार, इससे बांग्लादेश को बिजली निर्यात की अनुमति प्राप्त त्रिशूली और चलिमे जलविद्युत केंद्रों को नुकसान पहुंचा था। इसके बाद बिजली निर्यात रोक दिया गया था। बाढ़ के कारण द्विपक्षीय समझौते के तहत स्वीकृत जलविद्युत केंद्रों को नुकसान पहुंचने से भारत के हरियाणा राज्य को होने वाला बिजली निर्यात भी

आंशिक रूप से प्रभावित हुआ था। कार्यकारी निदेशक श्रेष्ठ ने बताया कि भारत के केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण से अन्य जलविद्युत केंद्रों में उत्पादित बिजली बांग्लादेश को निर्यात करने की अनुमति मिलने के बाद आपूर्ति फिर शुरू की गई है। उन्होंने कहा कि बाढ़ से प्रभावित जलविद्युत परियोजनाओं के उत्पादन और ट्रांसमिशन ढांचे को नुकसान पहुंचने के बावजूद अन्य परियोजनाओं से बिजली निर्यात जारी रखना और बांग्लादेश को आपूर्ति फिर शुरू होना नेपाल के बिजली व्यापार के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उनके अनुसार, इससे मानसून के दौरान उत्पादित अतिरिक्त बिजली के लिए बाजार प्रबंधन करने और क्षेत्रीय बिजली व्यापार का विस्तार करने में मदद मिलने की उम्मीद है। नई व्यवस्था के तहत त्रिशूली, देवीघाट और चलिमे जलविद्युत केंद्र के स्थान पर सोलु, काबेली-1 और लोअर मोदी जलविद्युत केंद्रों से उत्पादित बिजली बांग्लादेश और हरियाणा को निर्यात करने की अनुमति मिली है।